ORIGINAL RESEARCH PAPER

Education

KEY WORDS:

राष्ट्रभाषा ''हिन्दी'' की विश्व स्तर पर भूमिका का अध्ययन

डॉ0 सुमित्रा असिस्टेंट प्रोफेसरए जे.जी. कॉलेज ऑफ एज्यूकेषन, सिरसा (हरियाणा)

प्रस्तावना

भाषा संसार की समस्त कलाओं को श्रेष्ट अभिव्यक्ति प्रदान करने वाली एक वैज्ञानिक कला है, जिसे मानव निरन्तर शुद्ध अभ्यास से अर्जित करता है। मानव–समाज एक श्रेष्ठतम उपलब्धि के बिना समाज गूँगा रहता है। सामाजिक मानव बिना वैचारिक आदान–प्रदान के या बिना संभाषण और आचरणगत आदान–प्रदान के अधूरा है। इसलिए भाषा को अपने भावों और विचारों के परस्पर आदान–प्रदान का मुख्य साधन माना जाता है। मानव–मन की अनुभूतियों को अभिव्यक्ति तक पहुँचाने का काम भाषा ही करती है।

आज 21वीं सदी की भाषा हिन्दी है, जो बहुत आगे बढ़ चुकी है। भारत के बाहर विश्व पटल पर हिन्दी को बोलने और समझने वालों की संख्या करोड़ों में है। भारतीय मूल के लगभग डेढ़ करोड़ लोग विश्व के विभिन्न देशों में बिखरे हुए हैं। अमेरिका के 24 तथा अन्य प्रमुख देशों के लगभग 150 विश्वविद्यालयों में हिन्दी के अध्ययन–अध्यापन की व्यवस्था सुलभ है। मॉरिशस में सरकारी–गैर सरकारी लगभग 1980 स्कूलों में हिन्दी पड़ाई जा रही है। प्रयोक्ताओं की संख्या के आधार पर 1952 में हिन्दी विश्व के पाँचवें स्थान पर थी। 1980 के आस–पास पहुँचते–पहुँचते यह चीनी और अंग्रेजी के बाद तीसरे स्थान पर आ गई। ''हिन्दी लगभग 18 करोड़ से भी अधिक भारतवासियों की मातृभाषा है। 30 करोड़ से अधिक लोगों ने इसे द्वितीय भाषा के रूप में अपनाया है। देश को भौगोलिक सीमाओं से बाहर अन्य देशों में हिन्दी बोलने वालों की संख्या पर दृष्टि डालें तो यह संख्य संयुक्त राज्य अमेरिका में 1 लाख, मॉरिशस में 6,85,170, दक्षित अफ्रीका में 8,90,292, यमन में 2,32,760, युगांडा में 1,47,000, सिंगापुर में 5,000, नेपाल में 80 लाख, न्यूजीलैंड में 20,000 तथा जर्मनी में 30,000 ठहरती है। आज हिन्दी एक ग्लोबल भाषा बन चुकी है। बल्कि एक बड़े जन समुदाय की लचीली और उदार भाषा के रूप में हिन्दी की शाखाएँ लगातार फैल रही हैं। बाजार की भाषा, मनोजरंजन की भाषा, विज्ञापन की भाषा, शिक्षा एवं ज्ञान की विमर्श भाषा, मीडिया की भाषा, राजनीतिज्ञों की भाषा, कम्प्यूटर की भाषा, फिल्मों की भाषा के रूप में हिन्दी का स्वरूप लगातार बदल रहा है और दिनोदिन इसका विस्तार एवं प्रसार हो रहा है।

हिन्दी के समाचार–पत्र पत्रिकाओं के आंकड़े इसके प्रभाग है। ''अंग्रेजी अखबारों में सर्वाधिक पढ़ा जाने वाला 'टाईम ऑफ इण्डिया' है लेकिन, हिन्दी सामचार पत्र 'दैनिक जागरण' के कारण यह पाँचवे स्थान पर पहुँच गया। सर्वेक्षण के अनुसार 'दैनिक जागरण' सर्वाधिक पाठक संख्या वाला समाचार पत्र है, इसे 5 करोड़ 36 लाख लोग पढ़ते हैं। 'दैनिक भास्कर' के पाठकों की संख्या 3 करोड 6 लाख, अमर उजाला' की पाठक संख्या 2 करोड़, 52 लाख और दैनिक हिन्दुस्तान के पाठकों की संख्या 2 करोड 35 लाख है। सन् 1962 में तत्कालीन सांसद व दैनिक जागरण के सम्पादक श्री नरेन्द्र मोहन ने प्रवासी भारतीयों को हिन्दी में समाचार उपलब्ध कराने की घोषणा की थी। आज ई–जागरण घर–घर में पढ़ा जा रहा है।''

''इंडिया टुडे' का हिन्दी संस्करण आज भी शीर्ष 10 में अपना स्थान बनाये हुए है। इसके पाठकों की संख्या 70 लाख है। लगभग अपने अंग्रेजी संस्करण के ही बराबर सम्पूर्ण विश्व में चीनी भाषा बोलने वालों की संख्या 60 करोड़ है जबकि हिन्दी बोलने वालों की संख्या विश्व में लगभग 100 करोड़ है।'' भारत का सबसे बड़ा अखबार ''दैनिक भास्कर'' अब विश्व का चौथा सर्वाधिक प्रसार संख्या वाला अखबार भी बन गया है। विश्व प्रसिद्व संस्था 'वर्ल्ड एसोसिएशन ऑफ न्यूज पेपर्स एण्ड पब्लिशर्स' (वैन इफ्रा) की रिपोर्ट के अनुसार दुनियाभर में प्रकाशित होने वाले अखबारों में दैनिक भास्कर की प्रसार संख्या चौथे नम्बर पर है।

आज कॉर्पेरिट जगत भी यह जान चुका है कि यदि हिन्दी की ओर नहीं भागे तो धन कमाना कठिन हो जाएगा। अंग्रेजी कम्पनियाँ भी बाजार की दशा को देखते हुए अपने विज्ञापन हिन्दी में दे रही हैं। वर्तमान हिन्दी मीडिया धन कमाने की दौड़ में भी काफी अग्रसर है, जबकि अंग्रेजी मीडिया का ग्राफ क्रमशः तेजी से नीचे जा रहा है। इसका सबसे बड़ा प्रमाण दिल्ली विश्वविद्यालय में जब स्नातक स्तर पर हिन्दी जनसंचार पाठयक्रम का श्रीगणेश हुआ तो उसमें अंग्रेजी की अपेक्षा हिन्दी भाषी के अलावा दूसरे देशों के अहिन्दी भाषी भी सम्मिलित हुए। 21वीं सदी के आरंभिक दौर में टेलिविजन और अन्य जनसंचार माध्यमों के कारण बाजार में अपना माल खपाने के लिए हिन्दी जितना कारगर सिद्व हो रही है, दूसरी कोई भाषा नहीं। हिन्दी आज मनोरंजन एवं विज्ञापन की नंबर एक भाषा बन गई है। प्रमोद जोशी के अनुसार–''हर घर कुछ कहता है, आप क्लोजअप कयों नहीं करते हैं, ये दिल माँगे मोर, ठण्डा मतलब कोका कोला और पप्पू पास हो गया जैसे तमाम विज्ञापन हिन्दी में सफल हुए। अंग्रेजी में बनते तो कहा नहीं जा सकता कि क्या होता। दसेक साल पहले तक विज्ञापन अंग्रेजी में ही होते थे। बाहर का पेय 'थम्स अप टैंस्ट द थंडर' बोलकर बिकता था। बाहर से पेप्सी आया तो वही है राईट चॉइस बेबी, आहा। 'चिल्ल चिल्लाते हुए आया। थम्सअप भी' तूफानी ठण्डा।''

बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के कार्यालयों में यद्यपि आज भी अंग्रेजी का बोलबाला है, पर यही कम्पनियाँ अपनी उत्पादित वस्तुओं के साथ दिए जाने वाला लिटरेचर हिन्दी में भी छाप रही हैं। रेडियो, कम्प्यूटर तथा इंटरनेट के क्षेत्र में भी हिन्दी की स्थिति निरन्तर बेहतर हो रही है।

विश्व मानचित्र में हिन्दी :– ''भारत से बाहर हिन्दी का लेखन एवं प्रसार–प्रचार प्रायः दो रूपों में हो रहा है। प्रथम के अन्तर्गत जो देश आते हैं, जहाँ भारत से जाने वाले प्रवासी भारतीय और भारतवंसी निवास करते हैं, जिनके पूर्वजों की मातृभाषा हिन्दी रही, जोकि आजकल सूरीनाम, फिजी, मॉरीशस, गुयाना, त्रिनीदाद, बर्मा, थाईलैण्ड, दक्षिण अफ्रीका, कीनिया, सिंगापुर, इण्डोनेशिया, लाओस, मलेशिया आदि देशों में रह रहे हैं। दूसरे के अन्तर्गत वे देश आते हैं, जहाँ के लोग हिन्दी को एक 'विश्वभाषा' के रूप में स्वान्तः सुखाय अभ्यास करते और लिखते रहते हैं। इसमें अमेरिका, सोवियत रूस, इग्लैण्ड, जापान, चैकोस्लोवाकिया, फ्रांस, जर्मनी, पौलैण्ड, नार्वे, हंगरी, होलैण्ड, आस्ट्रेलिया, चीन, स्वीडन, कनाडा आदि देश आते हैं।''

प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन का उद्घाटन (10 से 14 जनवरी, 1975) को करते हुए मॉरीशस के प्रधानमंत्री सर श्री शिव सागर राम गुलाम ने नागपुर में कहा था– 'हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा तो है लेकिन हमारे लिए इस बात का महत्व है कि यह अन्तर्राष्ट्रीय भाषा है। 'मॉरीशस पूर्ववत हिन्दी के ध्वज को पूर्ण गरिमा और गौरव के साथ बनाए हुए हैं। मॉरीशस में हिन्दी का लेखन, प्रचार–प्रसार प्रसूर मात्रा में हो रहा है। वहाँ के डॉ0 मुनीवरलाल, डॉ हेमराज सुन्दर, रामदेव धुरंधर, पूजानंदनेमा, सोमदत्त बखौरी, ब्रजेन्द्र मधुकर अभिमन्यु अंनत आदि साहित्यकारों ने हिन्दी साहित्य को आगे बढ़ाने में पूर्ण वृद्वि की है।

पूर्व प्रधानमंत्री स्व0 श्रीमती इंदिरा गाँधी ने प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन पर कहा था– ''हिन्दी विश्व की महान भाषाओं में एक है। यह करोड़ों की भाषा है। करोड़ों ऐसे लोग हैं, जो इसे दूसरी भाषा के रूप में पढ़ते बोलते हैं। हिन्दी द्वारा भारत की अन्य देशों से मित्रता की कड़ियाँ दृढ होंगी। ''हिन्दी भाषा में अन्य सभी भाषाओं के शब्दों को पचाने की पूर्ण क्षमता है इसी से उसके विरूद्ध प्रचार होने के बाद भी गतिशील ही अग्रसर है। हिन्दी जिन्दगी का एक हिस्सा है, हिन्दी जिन्दा है। हिन्दी किसी एक वर्ग या वर्ण या जाति धर्म या मजहब या मार्ग या देश या संस्कृति की नहीं, हिन्दी भारत की है, मॉरीशस की है, इग्लैण्ड की है, सारी दूनिया की है, हिन्दी आपकी है, हिन्दी मेरी है, हिन्दी हम सब की है।

संसार में हिन्दी ही एक ऐसी भाषा है जिसे विदेशियों ने सबसे पहले विश्व पटल पर रखा। सर्वप्रथम हिन्दी के शोधार्थी पियो तेस्सोतोरी ने फ्लोरेंस विश्वविद्यालय इटली में'रामचरित मानस और वाल्मीकि रामायण का तुलनात्मक अध्ययन' पर शोध। इंग्लैण्ड के पूर्व प्रधानमंत्री टोली ब्लेयर ने विगत दीपावली में हिन्दी में बधाई देकर अंग्रेजी भाषा की मानसिकता वाले लोगों में हिन्दी का विश्वास जगाया। अभी कुछ वर्श पूर्व अमेरिका के राष्ट्रपति जार्जवुश का कथन भी चर्चा में रहा– 'हिन्दी 21वीं सदी होने जा रही है। 'देवनागरी हिन्दी की लिपि है जिसकी वैज्ञानिकता को विश्व ने भी स्वीकारा है। अब हिन्दी भाषा अन्तर्राष्ट्रीय मण्डलीयकरण युग की विश्व–भाषा बन चुकी है। अनेक विदेशी हिन्दी विद्वानों ने हिन्दी में साहित्यिक रचनाऐं की है। शब्दकोश, प्रकाशित किए है जिस कारण हिन्दी भाषा को विश्व के विभिन्न देशों में पढ़ा और समझा जा रहा है।

संदर्भ सूची –

1. ↑ "Why Hindi isn't the national language". gS ewy ls 3 twu 2019 dks iqjkysf[kr] vfHkxeu frfFk 3 twu 2019-
2. THE OFFICIAL LANGUAGES ACT, 1963 Archived 1 June 2009 at the Wayback Machine
3. *"THE OFFICIAL LANGUAGE POLICY OF THE UNION | Department of Official Language | Ministry of Home Affairs | GoI". rajbhasha.nic.in. Retrieved 20 March 2019.*
4. राज आलोक : हिन्दी राश्ट्रीयता, कमला साहित्य सदन, बरेली, 2011
5. ार्मा, एस.के. : हमारी राश्ट्रभाशा हिन्दी, शुभ्रा प्रकाशन, लखनऊ, 2015